International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण प्रतिमान उपयोग करने की अभिवृत्ति का अध्ययन

अनामिका श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक
श्री सांई कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल

स्वाति पाठक
सहायक प्राध्यापक
वेदिका कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल

हरगोविन्द शुक्ला
प्राचार्य,
श्री गणेश बी.एड. कॉलेज, मांडवी, आठनेर, बैतूल

प्रस्तुत शोधपत्र में म.प्र. राज्य के भोपाल जिले में स्थित शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणाथिर्यों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया गया है। इसके लिए शोधकर्ताओं ने भोपाल जिले के 10 शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत 130 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा कर उन पर स्वनिर्मित प्रयनावली का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना – शिक्षण प्रतिमान वह युक्ति है, जिसके प्रयोग से शिक्षण प्रभावी एवं रूचिकर हो जाता है क्योंकि इनका विकास अधिगम सिद्धान्तों के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक शिक्षण प्रतिमान में इस तरह का वातावरण तैयार किया जाता है, जिससे छात्र एवं शिक्षक के मध्य अतः क्रिया हो सके जिससे छात्र का अधिगम स्थाई हो, वह सिर्फ सतही ज्ञान न प्राप्त करें बल्कि अपनी खोज से वास्तविक व चिर स्थाई ज्ञान प्राप्त कर सके।

प्रत्येक शिक्षण प्रतिमान किसी न किसी सिद्धान्त पर आधारित होता है अतः इनकी प्रकृति वैज्ञानिक होती है, इसके क्रमबद्ध सोपान होते हैं, जिनका अनुसरण करते हुए शिक्षक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

को अपनी पाठयोजना तैयार करनी होती है। शिक्षण प्रतिमान छात्र केन्द्रित होते हैं अतः शिक्षक को वह योजना तैयार करनी होती है जिससे छात्र अधिक से अधिक अंतःक्रिया कर सकें और शिक्षक का कार्य सिर्फ मार्गदर्शन का हो।

बी.एड प्रशिक्षणार्थी जो शिक्षण की नयी–नयी युक्तियों को सीखते हैं, अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए उनकी शिक्षण प्रतिमान के उपयोग के प्रति अभिवृति को जानने के लिए प्रस्तुत शोध किया गया है।

समस्या कथन – बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान उपयोग करने के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध में निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. यह अध्ययन करना कि कितने बी.एड. प्रशिक्षणार्थी प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करते हैं।
2. यह अध्ययन करना कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में क्या सम्स्याएँ आती हैं।
3. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना – अध्ययन को सुचारू रूप से कराने के निम्न परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया –

1. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि – शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

न्यादर्श – शोधकर्ताओं ने 130 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन भोपाल जिले के 10 महाविद्यालयों से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया।

उपकरण – आँकड़ो के संकलन हेतु प्रश्नावली एवं साक्षात्कार का उपयोग किया गया। प्रश्नावली का निर्माण शोधकर्ताओं द्वारा स्वयं किया गया। जिसमें प्रतिमान संरचना, प्रतिमान के उपयोग, प्रतिमान संरचना में आने वाली समस्याओं एवं व्यवहारिक स्थिति को जानने से संबंधित प्रश्न रखे गये। प्रश्नावली को 5 पांइट रेटिंग स्केल (लिकर्ट स्केल) के आधार पर बनाया गया।

आँकड़ों का विवेचन – आँकड़ों का विश्लेषण साँख्यिकी के मध्यमान, मानक विचलन, प्रतिशत एवं 'क्रांतिक अनुपात' परीक्षण की सहायता से किया गया। साक्षात्कार द्वारा ज्ञात उत्तरों का भी उपयोग विवेचन की पुष्टि के लिए किया गया।

निष्कर्ष – सर्वप्रथम प्रशिक्षार्थियों की प्रतिमान के प्रति अभिवृत्ति का आंकलन किया गया, चित्र 1 यह दर्शाता है

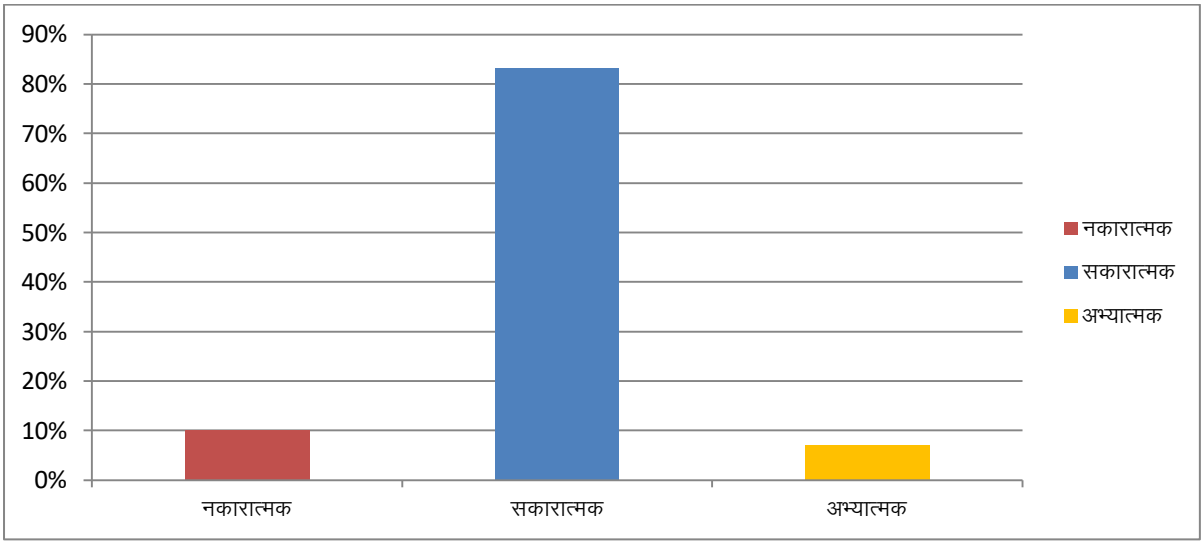

आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 83 प्रतिशत बी.एड. प्रशिक्षणार्थी प्रतिमान के उपयोग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति वाले हैं, 10 प्रतिशत नकारात्मक अभिवृत्ति वाले हैं एवं शेष 7 प्रतिशत उभयात्मक प्रवृत्ति वाले हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्या का अध्ययन –

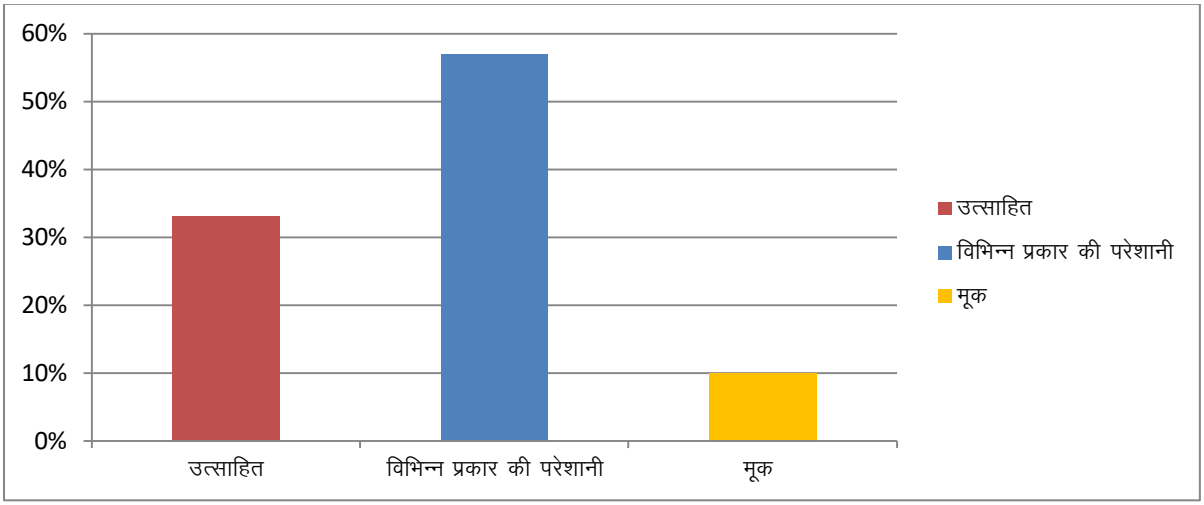

आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 33 प्रतिशत (लगभग एक तिहाई) अभ्यार्थी प्रशिक्षण प्रतिमानों का उपयोग बिना किसी परेशानी के उत्साहित होकर करते हैं। वहीं आधे से अधिक अभ्यार्थियों को शिक्षण प्रतिमान का उपयोग करने में विभिन्न प्रकार की परेशानी होती है। 10 प्रतिशत अभ्यार्थी इस विषय पर मूक रहे।

शिक्षण प्रतिमान का उपयोग करने में परेशानी अनुभव करने के निम्नलिखित कारण ज्ञात हुए।

अ) **उचित मार्गदर्शन का अभाव–** बी.एड. महाविद्यालयों में विभिन्न शिक्षण प्रतिमानों के उपयोग करने की उचित ट्रेनिंग नहीं दी जाती, जिस वजह से अपनी पाठ्योजना शिक्षण प्रतिमान के अनुसार बनाने में अभ्यार्थी परेशानी का अनुभव करते हैं।

ब) **नवाचार –** शिक्षण नवाचारों के प्रति सभी विद्यार्थी का रूख अत्यधिक उत्साही नहीं हैं, अतः वे नवाचार से बचकर पुरानी पद्धति से ही कार्य करना चाहते हैं। यह शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में बहुत बड़ी बाधा है।

ब) **अधोसंरचना –** कई आधुनिक शिक्षण प्रतिमान के उपयोग के लिए आई.सी.टी का उपयोग आवश्यक है, सभी विद्यालयों में इस प्रकार की अधोसंरचना के अभाव में भी अभ्यार्थी शिक्षण प्रतिमानों का उपयोग नहीं कर पाते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

परिकल्पना 1. महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 01

Group	N	Mean	SD	CR – Ratio
महिला प्रशिक्षणार्थी	65	29.79	2.73	1.01
पुरूष प्रशिक्षणार्थी	65	29.13	4.35	

स्वतंत्रता के अंश – 128 0.05 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.01 स्वतंत्रता के अंश 18 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम है।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना 2. महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 02

Group	N	Mean	SD	CR – Ratio
महिला प्रशिक्षणार्थी	65	17.98	3.04	1.15
पुरूष प्रशिक्षणार्थी	65	17.23	4.15	

स्वतंत्रता के अंश – 128 0.05 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.15 स्वतंत्रता के अंश 128 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम है।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष –

1. 83 प्रतिशत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण प्रतिमान के उपयोग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, 10 प्रतिशत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में नकारात्मक अभिवृत्ति एवं शेष 7 प्रतिशत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में उभयात्मक प्रवृत्ति पाई गयी।
2. 33 प्रतिशत (लगभग एक तिहाई) बी.एड. प्रशिक्षणार्थी शिक्षण प्रतिमानों का उपयोग बिना किसी परेशानी के उत्साहित होकर करते हैं। वहीं आधे से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान का उपयोग करने में विभिन्न प्रकार की परेशानी होती है। 10 प्रतिशत बी.एड. प्रशिक्षणार्थी इस विषय पर मूक रहे।
3. महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रतिमान का उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करने की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. महिला एवं पुरूष बी.एड प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण प्रतिमान के उपयोग में आने वाली समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

उपसंहार

यह शोध दर्शाता है कि ''शिक्षण प्रतिमान'' का उपयोग छात्रों के व्यवहार परिवर्तन हेतु अभ्यार्थी करना चाहते हैं, किन्तु विभिन्न कारणों की वजह से उपयोग नहीं कर पाते। अतः इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 8, August - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ :

- Bruner, J.S. (1991) The Narrative Construction of Reality Critical inquari
- Best, J.W. (1964) Research in Education, Englewood cliffst prentic Hall.
- Chiniwar (2013) "Effectiveness of CAI in comparison with the mean scores of boys and girls with respect to Manager in attitude towards English grammar in experimental group
- Aggarwal, Y.P. (1990) "Statistical Methods" Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi
- Mangal, S.K. (2000), "Advanced Educational psychologiy", prentice Hall of India Private Limited, New Delhi
- Pathak, R.P. (2008), "Methodology of Educational Research", Atlantic Publishers & Distributors, Pvt. Ltd., New Delhi.